



ई-न्यायालय एकीकृत मशिन मोड परियोजना

प्रलिस के लयः

सर्वोच्च न्यायालय, ई-फाइलिंग, ई-न्यायालय एकीकृत मशिन मोड परियोजना, नेशनल ज्यूडिशियल डेटा ग्रडि (NJDG)

मेन्स के लयः

भारतीय न्यायपालिका का डजिटलीकरण: चुनौतियाँ, समाधान

चर्चा में क्यों?

भारत सरकार ने प्रौद्योगिकी का उपयोग करके न्याय तक पहुँच में सुधार के उद्देश्य से ज़िला और अधीनस्थ न्यायालयों के कंप्यूटरीकरण हेतु देश में [ई-न्यायालय एकीकृत मशिन मोड परियोजना](#) शुरू की।

ई-न्यायालय एकीकृत मशिन मोड परियोजना:

- परिचय और कार्यान्वयन:
 - [राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस योजना](#) के हिससे के रूप में यह परियोजना [भारतीय न्यायपालिका](#) के [सूचना और संचार प्रौद्योगिकी \(ICT\)](#) विकास हेतु वर्ष 2007 से कार्यान्वित है।
 - ई-न्यायालय परियोजना को [भारत के सर्वोच्च न्यायालय](#) की ई-समिति और न्याय विभाग के सहयोग से लागू किया जा रहा है।
- चरण:
 - चरण I:** इसे वर्ष 2011-2015 के दौरान लागू किया गया था।
 - चरण II:** इसे वर्ष 2015 में शुरू किया गया था जिसके तहत विभिन्न ज़िला और अधीनस्थ न्यायालयों को कंप्यूटरीकृत किया गया है।

परियोजना के तहत की गई पहल:

- नेटवर्क में सुधार:** वाइड एरिया नेटवर्क (WAN) परियोजना के तहत बेहतर बैंडविडिथ गति के साथ पूरे भारत में कुल कोर्ट कॉम्प्लेक्स के 99.4% को कनेक्टिविटी प्रदान की गई है।
- ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर:** [केस इंफॉर्मेशन सॉफ्टवेयर \(CIS\)](#) [फ्री एंड ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर \(FOSS\)](#) पर आधारित है जिसे [राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र \(NIC\)](#) द्वारा विकसित किया गया है।
- NJDG डेटाबेस:** [राष्ट्रीय न्यायिक डेटा ग्रडि \(NJDG\)](#) आदेशों, नरिण्यों और मामलों का एक डेटाबेस है, जिससे ई-न्यायालय परियोजना के तहत एक ऑनलाइन मंच के रूप में विकसित किया गया है।
 - यह सभी कंप्यूटरीकृत ज़िला और अधीनस्थ न्यायालयों की न्यायिक कार्यवाहियों/नरिण्यों से संबंधित जानकारी प्रदान करता है।
- मामले की स्थितिकी जानकारी उपलब्ध कराना:** वर्ष 2020 में केंद्र और राज्य सरकारों, संस्थागत वादियों तथा स्थानीय सरकारों कोलंबति नगिरानी एवं अनुपालन में सुधार हेतु व NJDG डेटा तक पहुँच की अनुमति देने के लिये [ओपन एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस \(API\)](#) पेश किये गए थे।
 - वकीलों/वादकारियों को मामले की स्थिति, वाद सूची, नरिण्य आदि पर वास्तविक समय की जानकारी प्रदान करने हेतु 7 प्लेटफॉर्म बनाए गए हैं।
 - इसके अलावा वकीलों और जजों के लिये मोबाइल एप के साथ [इलेक्ट्रॉनिक केस मैनेजमेंट टूल \(ECMT\)](#) बनाए गए हैं।
- आभासी न्यायालय:** ट्रैफिक चालान मामलों को संभालने के लिये 17 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में 21 [आभासी न्यायालय](#) संचालित किये गए हैं।
 - 21 आभासी न्यायालयों द्वारा 2.40 करोड़ से अधिक मामले नपिटाए गए हैं।
- वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग:** [वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग](#) सुविधाएँ न्यायालय परिसरों और संबंधित जेलों के मध्य भी सक्रम की गई हैं।
 - लाखों मामलों की सुनवाई कर सर्वोच्च न्यायालय एक वैश्विक नेता के रूप में उभरा है।
- ई-फाइलिंग:** उन्नत सुविधाओं के साथ कानूनी कागज़ात की इलेक्ट्रॉनिक फाइलिंग के लिये नई ई-फाइलिंग प्रणाली शुरू की गई है। वर्ष 2022 तक कुल 19 उच्च न्यायालयों ने ई-फाइलिंग के मॉडल नयियों को अपनाया है।

- **समन के संबंध में:** समन देने और जारी करने की प्रौद्योगिकी सक्षम प्रक्रिया के लिये **राष्ट्रीय सेवा और इलेक्ट्रॉनिक प्रक्रियाओं की ट्रेकिंग (NSTEP)** शुरू की गई है।
 - इसे वर्तमान में 28 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में लागू किया गया है।
- **उपयोगकर्ता के अनुकूल पोर्टल:** कई उपयोगकर्ता अनुकूल सुविधाओं के साथ एक नया "**जजमेंट सर्च**" पोर्टल प्रारंभ किया गया है। यह सुविधा सभी को नि:शुल्क प्रदान की जा रही है।

फेज III:

- **ई-न्यायालय परियोजना का तीसरा चरण:**
 - **ई-न्यायालय परियोजना चरण III** के लिये मसौदा वज़िन दस्तावेज़ को अंतिम रूप दे दिया गया है और ई-समिति, भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा अनुमोदित किया गया है।
 - यह चरण एक न्यायिक प्रणाली का उल्लेख करता है जो न्याय की मांग करने वाले या भारत में न्याय के वितरण का हिस्सा है जो प्रत्येक व्यक्त के लिये अधिक कफ़ायती, सुलभ, लागत प्रभावी, अनुमानित, भरोसेमंद और पारदर्शी है।
 - **यह एक ऐसी भारतीय न्यायिक प्रणाली को संदर्भित करती है** जो न्याय मांगने वाले अथवा न्यायिक प्रशासन में भाग लेने वाले सभी के लिये अधिक सुलभ, कफ़ायती, भरोसेमंद और पारदर्शी है।
- **चरण III में नई विशेषताएँ:**
 - डिजिटल और पेपरलेस/कागज़ रहित न्यायालय का उद्देश्य न्यायालयी कार्यवाही को डिजिटल प्रारूप में लाना है।
 - ई-न्यायालय में वादियों (Litigants) अथवा वकीलों की उपस्थिति की समस्या खत्म की जा सकती है।
 - यातायात उल्लंघनों के अधिनियम से परे आभासी न्यायालयों के दायरे का वसतिार।
 - मामलों की लंबितता के विश्लेषण के लिये **आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (AI)** और इसके सबसेट जैसे **ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकॉग्निशन (OCR)** आदि उभरती हुई तकनीकों का उपयोग, संभावित मुकदमेबाज़ी का पूर्वानुमान आदि।

संबंधित चिंताएँ और समाधान:

चिंताएँ	समाधान
<ul style="list-style-type: none"> ■ तकनीकी चुनौतियाँ: <ul style="list-style-type: none"> ○ जटिल प्रक्रियाएँ जसमें मौजूदा तकनीक और बुनियादी ढाँचे का उन्नयन शामिल है, जससे तकनीकी चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। 	<ul style="list-style-type: none"> ■ तकनीकी उन्नयन: <ul style="list-style-type: none"> ○ तकनीकी बुनियादी ढाँचे के नियमित उन्नयन और रखरखाव से तकनीकी चुनौतियों को कम करने में मदद मिल सकती है।
<ul style="list-style-type: none"> ■ साइबर सुरक्षा जोखिम: <ul style="list-style-type: none"> ○ डिजिटल रूप से संग्रहित संवेदनशील और गोपनीय सूचनाओं की बढ़ती मात्रा के साथ न्यायालयों को साइबर हमलों तथा डेटा उल्लंघनों के जोखिम का सामना करना पड़ता है। 	<ul style="list-style-type: none"> ■ साइबर सुरक्षा उपाय: <ul style="list-style-type: none"> ○ एन्क्रिप्शन, सुरक्षा डेटा स्टोरेज और मल्टी-फ़ैक्टर ऑथेंटिकेशन जैसे मज़बूत साइबर सुरक्षा उपायों को लागू करना।
<ul style="list-style-type: none"> ■ न्यायसमय संबंधी चुनौतियाँ: <ul style="list-style-type: none"> ○ न्यायालयों का डिजिटलीकरण हाशिये पर रहने वाले समुदायों के लिये न्याय तक पहुँच में मौजूदा असमानताओं को बढ़ा सकता है, विशेष रूप से उन लोगों के लिये जिनके पास प्रौद्योगिकी तक पहुँच नहीं है या जिनके पास सीमित डिजिटल साक्षरता कौशल है। 	<ul style="list-style-type: none"> ■ अभिम्यता और न्यायसंगत: <ul style="list-style-type: none"> ○ हाशिये के समुदायों के लिये डिजिटल कोर्ट सिस्टम को सुलभ और उपयोगकर्ता के अनुकूल बनाने से यह सुनिश्चित करने में मदद मिल सकती है कि न्याय तक सभी की पहुँच हो।
<ul style="list-style-type: none"> ■ अभिलेखों का संरक्षण: <ul style="list-style-type: none"> ○ अभिलेखों का डिजिटिकरण ऐतिहासिक अभिलेखों को संरक्षित करने और न्यायालयी अभिलेखों तक दीर्घकालिक पहुँच सुनिश्चित करने हेतु चुनौतियों का सामना करता है। 	<ul style="list-style-type: none"> ■ अभिलेख संरक्षण योजना: <ul style="list-style-type: none"> ○ एक व्यापक रिकॉर्ड संरक्षण योजना का विकास और कार्यान्वयन न्यायालय के अभिलेखों की दीर्घकालिक पहुँच एवं संरक्षण सुनिश्चित करने में मदद कर सकता है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. भारतीय न्यायपालिका के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2021)

1. भारत के सर्वोच्च न्यायालय के किसी भी सेवानिवृत्त न्यायाधीश को भारत के मुख्य न्यायाधीश द्वारा भारत के राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति से वापस बैठने और सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में कार्य करने के लिये बुलाया जा सकता है।
2. भारत में उच्च न्यायालय के पास अपने नरिणय की समीक्षा करने की शक्ति है जैसा कि सर्वोच्च न्यायालय करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (c)

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/e-courts-integrated-mission-mode-project>

